30

①

कवि भूषण की युग चेतना

(नातकभाग - 2
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
तृतीय पत्र)

जब रीतिकालीन कवि नायिका भेद और नखशिख-वर्णन में निमग्न थे, ठीक उसी समय कवि भूषण ने अपने युग की उस प्राणवान धारा को अभिव्यक्ति दी जो औरंगजेब के अत्याचार के विरुद्ध बह रही थी, जिसके सेनानायक छत्रपति शिवाजी थे। भूषण की राजप्रशस्ति में अपने युग की ~~चेतना~~ चेतना की प्रतिध्वनि स्पष्ट सुनाई पड़ती है।

कवि भूषण ने महाराज शिवाजी एवं बुन्देला वीर छत्रसाल की प्रशंसा में काव्य रचना करते हुए तीन प्रमुख

ग्रंथ लिखे :- शिवराजभूषण, शिव बावनी एवं छत्रसाल दशक। 'शिवराज भूषण' एक विशालकाय ग्रंथ है जिसमें 384 पद्य हैं। इसमें एक ओर तो अलंकारों के उदाहरण के रूप में शिवा जी के प्रौढ़ एवं पराक्रम का वर्णन किया गया है। 'शिवा बावनी' में 52 कवित्तों में शिवा जी के शौर्य, पराक्रम आदि का ओजपूर्ण वर्णन है, जबकि 'छत्रसाल दशक' में केवल 10 कवित्तों के अंतर्गत बुन्देला वीर छत्रसाल के शौर्य का वर्णन किया गया है।

शिवराज भूषण में कवि ने तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक स्थिति का विशद चित्रण कर अपने युग बोध का परिचय दिया है। कवि ने शिवा जी को राम, कृष्ण एवं शिव का अवतार बताते हुए औरंगजेब

के अत्याचारों से पीड़ित जनता का उद्धारक एवं मुक्तिदाता बताया है। इनकी कविता में तत्कालीन हालात का बड़ा ही जीवंत चित्रण मिलता है :-

"देखत बिलात फिरात निशान आली,
ऐसे सबे राव-राने सबै गए लबकी।
गौर गजपति आए औरंग को देखि ताप,
अपने मुकाम सब मारि गए दबकी ॥"

वस्तुतः भूषण ने औरंगजेब के धार्मिक अत्याचारों को अपनी आँखों से देखा था। यदि शिवा जी न होते तो संभवतः सबको मुसलमान बनाकर उनकी 'सुन्नत' कर दी जाती। ऐसे समय महाराज शिवा जी जैसे जन-नायक की आवश्यकता थी जो इन अत्याचारों पर अंकुश लगाकर

आततायियों का दमन कर सके।

कविवर भूषण ने तत्कालीन राज्यों एवं उनके अधिपति राजाओं की विभिन्न पुष्पों के रूप में कल्पना करते हुए निम्न छन्द की रचना की है :-

" कुरम कमल कमधज है कदम्ब फूल
गौर है गुलाब राना केतकी विराज हैं।
पाँडरि पंवार, जुही सोवत है चन्दावत
बकुल बुन्देला ओत हाड़ा हैं सराज हैं। "

कवि भूषण ने अपने काव्य में कुछ ऐतिहासिक घटनाओं का भी उल्लेख किया है। जब शिवाजी औरंगजेब के दरबार में गए तब बादशाह ने उनका अपमान करते हुए छः हजारी मनसबदारों के पास खड़ा कर दिया था। उन्होंने बादशाह को सलाम तक नहीं किया। उनका मुख क्रोध से लाल हो गया।

:— "

" सबन के ऊपर ही ठाड़े रहिबे के जोग,
ताहि खड़ो कियो छः हजारिन के नियरे।
जानि गैरमिसिल गुसीले गुस्सा धारि मनु,
कीन्हों न सलाम न वचन बोले सियरे॥"

शिवाजी की ऐसी धाक मुगल साम्राज्य में थी कि मुगलों की रानियाँ उनके नाम से घबरा जाती थीं। कविवर भूषण ने शिवाजी के इस आतंक के कारण मुगल स्त्रियों की जो दशा होती है, उसका आलंकारिक वर्णन इन पंक्तियों में किया है :—

" भूषन सिथिल अंग भूषन सिथिल अंग,
बिजन डुलाती ते वै बिजन डुलाती हैं।
'भूषन' भनत सिवराज वीर तेरे त्रास,
नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं॥"

भूषण वीर रस के ओज से सम्पन्न राष्ट्रीय कवि थे। उनकी कविता में राष्ट्रीयता का तत्व विद्यमान है।

उन्होंने उन्हीं राजाओं की प्रशंसा की है जो जनकल्याण में सम्बद्ध रहे और जिन्होंने हिन्दुओं के राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा की। वे आश्रयदाताओं के कोरे प्रशंसक नहीं थे अपितु धर्म संस्थापक जननायकों के प्रशंसक थे। इसीलिए आचार्य शुक्ल ने भूषण के बारे में कहा है "शिवा जी और छत्रसाल की वीरता के वर्णनों को छोड़ कवियों की झूठी खुशामद नहीं कह सकता। वे आश्रयदाताओं की प्रशंसा की प्रथा के अनुसरण मात्र नहीं हैं इन दो वीरों का का जिस उत्साह के साथ सारी हिन्दू जनता स्मरण करती है, उसकी की व्यंजना भूषण ने की है।"

निष्कर्ष यह है कि भूषण के काव्य में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना विद्यमान है। उनकी कविता में युग बोध जीवंत रूप में दिखाई पड़ता है।